ध्येयIAS®
most trusted since 2003

मार्च | 2024

डिजिटल युग में कला और संस्कृति

परीक्षोपयोगी सारगर्भित नोट्स

सरल व बोधगम्य भाषाशैली का उपयोग

डायग्राम, टेबल व चित्रों का तार्किक उपयोग

ध्येय IAS
योजना ज़िस्ट

डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप

परिचय:

- भारतीय संस्कृति अपनी समृद्ध कलात्मक विरासत के लिए सदैव से प्रसिद्ध रही है। विभिन्न शैलियों और कला रूपों, जैसे कि चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत, और हस्तशिल्प, भारत की विविधता और रचनात्मकता का प्रतीक हैं।
- डिजिटल युग के आगमन के साथ, कला के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। डिजिटल तकनीकों ने कलाकारों को अभिव्यक्ति के नए माध्यम और अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन साथ ही यह चिंता भी बढ़ी है कि पारंपरिक कला रूपों का भविष्य क्या होगा।

> किसी भी रूप में कला मानव मस्तिष्क की सृजन क्षमता की अभिव्यक्ति है। क्षमता अंतर्निहित हो सकती है, लेकिन यह हर इंसान में मौजूद है... जीवन की ऊर्जा की शक्ति और जीवंतता के रूप में छिपी हुई है। कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। डिजिटल रूप से बढ़ती तकनीक इसकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक रही है।

डिजिटल युग में कला:

- डिजिटल युग में कला के क्षेत्र में अनेक बदलाव हुए हैं। कलाकार अब डिजिटल टूल्स और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कलाकृतियां बना सकते हैं।
- 3D प्रिंटिंग, एनिमेशन, और इंटरैक्टिव कला जैसे नए कला रूपों का विकास हुआ है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कला के प्रदर्शन और प्रचार के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं।

पारंपरिक कला का महत्व: पारंपरिक कला रूपों का भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। ये कला रूप पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहे हैं और भारत की विरासत का अभिन्न अंग बन गए हैं। पारंपरिक कला में मानवीय स्पर्श और प्रामाणिकता होती है, जो डिजिटल कला में हमेशा नहीं मिल पाती।

डिजिटल कला का नकारात्मक प्रभाव: डिजिटल कला के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं। डिजिटल कला में मानवीय स्पर्श और प्रामाणिकता का अभाव हो सकता है। यह कला को भौतिकता से दूर ले जा सकती है। डिजिटल कला के क्षेत्र में भी plagiarism और copyright infringement जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

मिश्रित दृष्टिकोण: डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप को बनाए रखने के लिए हमें एक मिश्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। डिजिटल तकनीक का उपयोग कला के प्रचार और संरक्षण के लिए किया जाना चाहिए, लेकिन कला का सृजन मानवीय रचनात्मकता पर आधारित होना चाहिए।

डिजिटलीकरण का प्रभाव: डिजिटलीकरण का उपयोग कला के प्रचार और संरक्षण के लिए किया जाना चाहिए। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा सकता है, कला शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया जा सकता है, और कलाकारों को अपनी कला से अधिक आय अर्जित करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है।

निष्कर्ष: डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप को बनाए रखने के लिए हमें डिजिटल तकनीक का उपयोग कला के प्रचार और संरक्षण के लिए करना चाहिए। कला का सृजन मानवीय रचनात्मकता पर आधारित होना चाहिए। हमें कला के क्षेत्र में डिजिटल और पारंपरिक कला रूपों के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। डिजिटलीकरण के प्रभावों का उपयोग संवर्धन के लिए किया जाना चाहिए, सृजन के लिए नहीं।

भारत में लोकप्रिय संगीत

परिचय

- लोकप्रिय संगीत, संगीत का सरलतम और सहज रूप है, जो जनता द्वारा अधिक पसंद किया जाता है। इसकी सरलता और सहजता इसे आम दर्शकों के लिए आकर्षक बनाती है।
- प्रति खंड की समयावधि कुछ मिनटों तक सीमित है जिससे आम दर्शकों के लिए इसे सुनना आसान हो जाता है।
- यह एक प्रकार का संगीत है जो जनमानस की इंद्रियों को आनंदित करता है।
- यह पूरी तरह से नियमों से रहित नहीं है, हालांकि लोकप्रिय संगीत में ये नियम शास्त्रीय संगीत की तुलना में कम कठोर हैं।
- लोकप्रिय संगीत धुन के साथ-साथ शब्दों को भी महत्व देता है. यह मनभावन और मनोरंजक होता है और इसलिए अमूर्त कला से कोसों दूर होता है। लोकप्रिय संगीत के कुछ परिचित रूप जो वर्तमान में गाए जाते हैं इस प्रकार हैं:-

नाट्यसंगीत

लोकप्रिय संगीत अनेक रूपों से समृद्ध है, जिनमें शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत, बैंड संगीत, भावसंगीत, अभंग, भजन और भक्तिगीत शामिल हैं। भारत में राजशाही के पतन के बाद, शास्त्रीय संगीत और संगीतकारों को संरक्षण नहीं मिला। परिणामस्वरूप, वे अपनी आजीविका के लिए जनता पर निर्भर हो गए।

नाट्यसंगीत का उदय: जनता को आकर्षित करने के लिए संगीत के स्वरूप में परिवर्तन आया। प्रशंसा और मनोरंजन के लिए ख्याल प्रस्तुतियों को छोटी-छोटी रचनाओं में विभाजित किया गया। इन रचनाओं को रंगमंच के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिन्हें रंगमंच संगीत कहा जाता था।

विशेषताएं

- नाट्यगीत मराठी पाठ के साथ रागों पर आधारित गीत थे।
- इन्हें आलापों और तानों से अलंकृत किया जाता था।
- 'गंधर्व ठेका' नामक ताल का उपयोग नाट्यसंगीत में किया जाता था।
- नाट्यसंगीत में नवीन अलंकरण, धुनें, समृद्ध साहित्य और गायन की गुणवत्ता शामिल थी।
- विष्णुदास भावे का नाटक 'संगीत स्वयंवर 1843 में सांगली में मंचित होने वाला पहला संगीत नाटक था
- भास्करबुवा वाखले, गोविंदराव टेम्बे, अहमदजान थिरकवा और बाल गंधर्व जैसे महान उस्तादों ने नाट्यसंगीत में मौलिक योगदान दिया।

फ़िल्म संगीत

भारत में फिल्म संगीत लोकप्रिय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह अपने आप में ही एक अलग तरह का संगीत है। पश्चिमी फिल्मों के विपरीत, भारतीय सिनेमा में बड़े पैमाने पर गाने होते हैं जो इसका एक अभिन्न अंग हैं।

उद्भव: भारतीय सिनेमा के शुरुआती वर्षों में, गाने मुख्य रूप से कहानी को आगे बढ़ाने का हिस्सा हुआ करते थे। वर्ष 1920 के दशक में पश्चिम से भारत में रिकॉर्डिंग तकनीक आने के बाद संगीत क्षेत्र में फिल्म संगीत का विकास हुआ।

विशेषताएं

- फिल्म, प्रभावित करने और जनता तक पहुंचने का एक बहुत ही प्रभावशाली माध्यम है और ऐसा ही इसका संगीत भी है।
- फिल्म संगीत के शुरुआती दौर में शास्त्रीय रागों पर आधारित गाने हुआ करते थे।
- फिल्मों के कई गानों में बंदिशों को गाने के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था।
- 1980 के दशक में, ध्वनि प्रौद्योगिकी में आई प्रगति ने फिल्मों में संगीत को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया।
- मल्टी-ट्रैक रिकॉर्डिंग में त्रुटियों की संभावना कम होती है साथ ही यह एक समय में एक ट्रैक को रिकॉर्ड करने की स्वतंत्रता देता है और ध्वनियों में विविधता को सक्षम बनाता है।

बैंड संगीत

भारत में बैंड संगीत 1980 के दशक में उभरा और 1990 के दशक तक पूरी तरह से स्थापित हो गया। 'इंडियन ओशियन' भारत के अग्रणी और लोकप्रिय बैंड में से एक है।

उद्भव: इसका जन्म नया संगीत बनाने की आवश्यकता से हुआ जब संगीतकार मित्रों के एक समूह ने मिलकर अपनी पहली रचना तैयार की। 'इंडियन ओशियन' ने कबीर द्वारा लिखित ग्रंथों को चुना और अपना संगीत स्वयं तैयार किया।

विशेषताएं

- सदियों पुराने कबीर ग्रंथ आज भी प्रासंगिक हैं।
- इंडियन ओशियन जैसे लोकप्रिय बैंड भी नए ग्रंथ लिखने के बजाय इन ग्रंथों को चुनते हैं।
- कबीर का संदेश कालातीत है और दर्शकों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।
- धीरे-धीरे बैंड संगीत लोकप्रिय संगीत की एक महत्वपूर्ण शैली बन गया।
- अग्नि, स्वरात्मा, परिक्रमा और द लोकल ट्रेन जैसे कुछ और लोकप्रिय बैंड बने।

क्षेत्रीय लोकप्रिय संगीत

भारतीय संगीत की समृद्ध विरासत में क्षेत्रीय लोकप्रिय संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भावसंगीत या भावगीत, जिन्हें सुगम संगीत भी कहा जाता है, इस विधा का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। भावसंगीत की जड़ें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और संस्कृतियों में गहरी हैं।

विभिन्न प्रकार के भावसंगीत:

- **अभंग:** संतों द्वारा रचित, आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति भावना से युक्त।
- **भजन:** भगवान की स्तुति में गाए जाने वाले गीत, जिनमें भक्ति और प्रेम की भावनाएं प्रबल होती हैं।
- **भक्तिगीत:** कवियों द्वारा रचित, भक्ति और आध्यात्मिकता पर आधारित गीत।
- **लोकगीत:** विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से उत्पन्न, लोककथाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं।
- **आधुनिक भावसंगीत:** समकालीन रचनाकारों द्वारा रचित, भावसंगीत के पारंपरिक तत्वों को आधुनिक संगीत शैलियों के साथ मिश्रित करते हैं।

भावसंगीत की विशेषताएं:

- **गायन:** भावपूर्ण, मधुर और सूक्ष्म, शब्दों और भावनाओं पर विशेष ध्यान।
- **रचना**: लय और ताल की विविधता, सरल से जटिल तक, रागों का प्रयोग।
- **वाद्य:** तबला, हारमोनियम, सितार, बांसुरी, वायोलिन, और अन्य पारंपरिक वाद्यों का प्रयोग।
- **सांस्कृतिक प्रभाव:** विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, लोककथाओं, और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतिबिंब।

निष्कर्ष

प्रत्येक प्रकार के संगीत की एक निश्चित भूमिका होती है। ध्रु संगीत के ये सभी रूप रत्नों की तरह हैं जो संगीत की पूरी दुनिया को विशाल, विविध और समृद्ध बनाते हैं।

आधुनिक तकनीकों और संदर्भों के जरिये लोक कला की पुनर्कल्पना

परिचय

समकालीन समय में डिजिटलीकरण हमारे जीवन के हर पहलू को बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन के साथ, पारंपरिक तरीके अप्रत्याशित रूप से बदल रहे हैं। इसका प्रभाव भारतीय लोक कला के क्षेत्र पर भी पड़ रहा है, जो आधुनिक तकनीकी प्रगति को अपनाने के लिए बढ़ते दबाव का सामना कर रहा है।

> भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के रस सिद्धांत से प्रेरणा लेते हुए हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि कला चाहे वह दृश्य हो या प्रदर्शन, लोक हो या शास्त्रीय केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक चीजों को गढ़ने या उनकी सराहना करने से ही संबंधित नहीं है। यह हमारी अन्तरात्मा से गहन रूप से जुड़ने और अवर्णनीय को व्यक्त करने का एक साधन है।

डिजिटलीकरण के अवसर

स्मार्ट प्रौद्योगिकी को अपनाकर लोक कला शैलियों को विकसित होने और भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने का अवसर मिल सकता है। डिजिटल प्रसार के माध्यम से, वे अधिक दर्शकों तक पहुंच सकते हैं और अपनी कला को दुनिया के साथ साझा कर सकते हैं।

डिजिटलीकरण के चुनौतियां: विकसित होती प्रौद्योगिकी के माहौल में इन परंपराओं के अंतर्निहित सार को संरक्षित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। इन कला शैलियों को अपनी वास्तविकता बनाए रखने के लिए, एक कार्यप्रणाली खोजना महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण और परिवर्तन का ढलना

- लोक कला शैलियां समुदायों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को दर्शाती हैं और अनूठे रीति-रिवाजों को संरक्षित करने का माध्यम हैं।
- संगीत, नृत्य, या दृश्य माध्यमों के माध्यम से, वे समुदायों और भौगोलिक क्षेत्रों की पहचान को आकार देते हैं, उनकी सामूहिक चेतना और ऐतिहासिक विरासत को अभिव्यक्त करते हैं।
- सामुदायिक सहभागिता लोक कला शैलियों की निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण है।

लोक कलाओं की गतिशीलता

- शास्त्रीय कला रूपों के विपरीत, लोक कलाएं गतिशील और अनुकूलनीय होती हैं, जो अक्सर समकालीन प्रभावों और रुझानों को आत्मसात करती हैं।

- वैश्वीकरण के कारण अंतर-सांस्कृतिक प्रभावों ने लोक कलाओं को प्रभावित किया है, और वे अपने स्थानीय दायरे से बाहर निकलकर व्यापक मंचों तक पहुंच रही हैं।

परिवर्तन के प्रभाव

लोक परंपराएं अपनी जड़ों से दूर जा रही हैं और समकालीन विषयों और तकनीकों को अपना रही हैं। इस मिश्रण ने लोक कलाओं को पुनर्जीवित किया है और उन्हें समकालीन दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाया है।

संरक्षण के लिए डिजिटल आयाम में परिवर्तन के सरोकार

आधुनिक युग में, लोक कला और संगीत प्रस्तुति के लिए डिजिटल क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं। यह परिवर्तन इन कलाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और दर्शकों के व्यापक वर्ग, विशेष रूप से युवा पीढ़ी तक पहुंचने का अवसर प्रदान करता है। यह विकास डिजिटल युग की पहुंच में सुगमता और वैश्विक कनेक्टिविटी के प्रति झुकाव के अनुरूप है।

चिंताएं

हालांकि, इस बदलाव में पारंपरिक लोक कला शैलियों में निहित सूक्ष्म, अमूर्त और सहज तत्वों के कमजोर पड़ने की संभावना है। कुछ संगीतकारों ने लोक-कला शैलियों की शुद्धता और प्रामाणिकता को संरक्षित करने के महत्व पर जोर दिया है क्योंकि वे गहन मानवीय अभिव्यक्तियों को दर्शाते हैं।

डिजिटलीकरण के जोखिम

- मानवीय तत्व का कम होना: डिजिटलीकरण कला को कम्प्यूटेशनल अल्गोरिद्म और गैर-मानवीय इलेक्ट्रॉनिक संगीत तक सीमित कर सकता है।
- अल्गोरिदम पूर्वाग्रह: लोक कला शैलियों में स्थानीय-विशिष्ट बारीकियां डिजिटल टेम्पलेट्स में खो सकती हैं।
- एकसारता: डिजिटलीकरण कला को उत्पादित और अर्थहीन बना सकता है।

संरक्षण और नवाचार के बीच संतुलन

पारंपरिक लोक कला इतिहास, प्रतीकवाद और सांस्कृतिक कोड को समाहित करती है। डिजिटलीकरण इन तत्वों को खतरे में डाल सकता है। इसलिए, चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि डिजिटल अनुकूलन के बीच इन कला शैलियों का सार और मूलभूत तत्व लुप्त न हों।

समाधान

- **संरक्षण:** लोक कलाओं का दस्तावेजीकरण और संरक्षण महत्वपूर्ण है।

- **नवाचार:** डिजिटल तकनीकों का उपयोग कला को बढ़ावा देने और युवा पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।
- **संतुलन:** नवाचार और संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष: डिजिटलीकरण लोक कला के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, लेकिन यह सावधानी और संवेदनशीलता के साथ किया जाना चाहिए। नवाचार और संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखते हुए, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि लोक कला शैलियां डिजिटल युग में फल-फूल सकें।

'बुद्धिमत्ता के साथ 'कृत्रिम कला' से मेधा' तक

डिजिटल युग ने कला की दुनिया को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और जेनरेटिव एआई (जीएआई) जैसे नवाचारों ने कलाकारों को कम प्रयास में अधिक शक्तिशाली और आकर्षक कलाकृतियों का निर्माण करने में सक्षम बनाया है।

आधुनिक समय में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग

कला रूप	डिजिटल तकनीकों का उपयोग	लाभ	चुनौतियां
दृश्य कला	सिनेमा, एनीमेशन, वीएफएक्स	कम प्रयास, न्यूनतम बजट, रचनात्मक स्वतंत्रता	अनुचित उपयोगिता, नकली वीडियो
चित्रकारी	डिजिटल पेंटिंग, डिजाइन	अमूर्त कला, विभिन्न कला रूपों में उपयोग	डिजिटल कौशल की आवश्यकता, कला की प्रामाणिकता
मूर्तिकला	3डी मूर्तिकला, प्रोजेक्शन मूर्तिकला	सटीकता, जटिल डिजाइन, स्केलेबिलिटी	तकनीकी कौशल की आवश्यकता, उच्च लागत

वास्तुकला	रिमोट सेंसिंग, डेटा विश्लेषण, 3डी प्रिंटिंग	डिजाइन में सटीकता, जटिल संरचनाओं का निर्माण, समय और लागत में बचत	डिजिटल कौशल की आवश्यकता, उच्च लागत
नृत्य	लेजर नृत्य, इंटरैक्टिव नृत्य	मनोरंजक, आकर्षक, अभिनव	तकनीकी कौशल की आवश्यकता, उच्च लागत
संगीत	ऑटो-ट्यून, डिजिटल वाद्ययंत्र	बेहतर ध्वनि गुणवत्ता, रचनात्मक स्वतंत्रता, सहयोग में आसानी	कला की प्रामाणिकता, तकनीकी कौशल की आवश्यकता
छायांकन	वीएफएक्स, डिजिटल संपादन	रचनात्मक स्वतंत्रता, लोकेशन की सीमाओं को दूर करना, समय और लागत में बचत	तकनीकी कौशल की आवश्यकता, उच्च लागत, कला की प्रामाणिकता

डिजिटल युग के लाभ

- **व्यापक दर्शकों तक पहुंच:** वेबसाइटें, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गैलरी कलाकारों को दुनिया भर के दर्शकों तक पहुंचने में मदद करती हैं।
- **कलाकारों के बीच सहयोग:** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म कलाकारों को एक दूसरे से जुड़ने और विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।
- **सीधे संग्राहकों को बेचना:** कलाकार अब बिचौलियों की आवश्यकता के बिना अपनी कलाकृति सीधे संग्राहकों को बेच सकते हैं।
- **डिजिटल संरक्षण:** डिजिटल तकनीकें कलाकृतियों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में मदद करती हैं।

डिजिटल युग की चुनौतियां

- **डिजिटल टूल में दक्षता की आवश्यकता:** कलाकारों को डिजिटल कला बनाने के लिए आवश्यक टूल और सॉफ्टवेयर का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।

- **कलाकृतियों की प्रामाणिकता:** डिजिटल कला के ऑनलाइन प्रसार से नकली कलाकृतियों की पहचान करना मुश्किल हो जाता है।
- **डाटा गोपनीयता:** डिजिटल कला के निर्माण और साझाकरण से डेटा गोपनीयता से जुड़े जोखिम पैदा होते हैं।

निष्कर्ष

- डिजिटल युग ने नई कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूपों को बनाने में मदद की है, जिससे वे दुनिया भर में सुलभ हो गए हैं। फिर भी, यह गोपनीयता, डिजिटल अधिकार और कॉपीराइट उल्लंघन के मुद्दों पर भी काम आता है।
- हालांकि डिजिटल तकनीक का उपयोग लगभग सभी कला रूपों में किया जाता है, जो इसे अधिक रोमांचक तथा सुलभ बनाता है, लेकिन कभी-कभी यह दर्शकों को अवास्तविक आनंद देता है, इसलिए सच्ची कला का उद्देश्य विफल हो जाता है। हमें डिजिटल तकनीक का कितना उपयोग करना चाहिए. इसके लिए हमें खुद को प्रतिबंधित करना चाहिए या सीमाएं बनानी चाहिए।

भारत की कलात्मक विरासत का संरक्षण

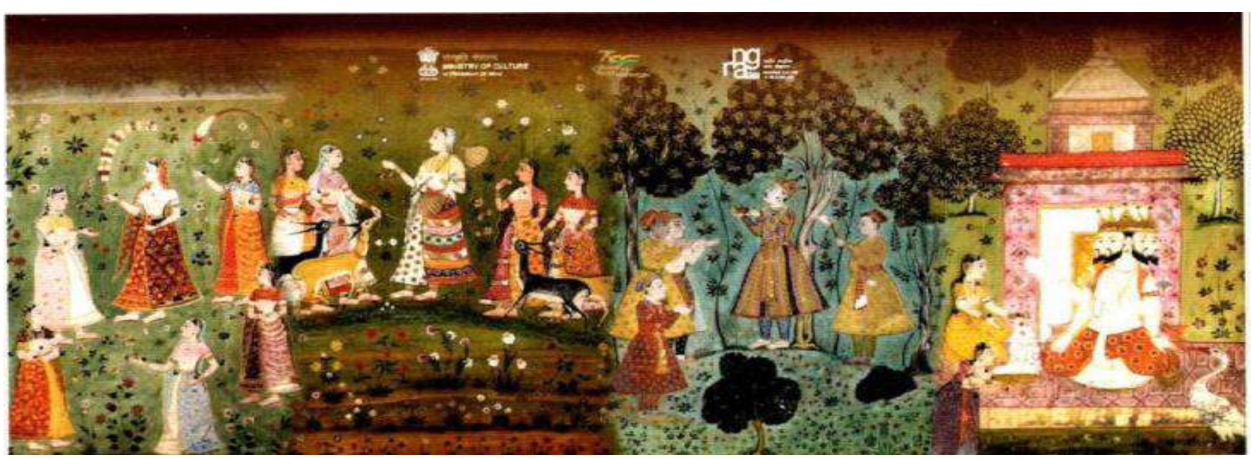

परिचय

भारत, 5,000 वर्षों से अधिक की समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत का घर है। इस विरासत को संरक्षित करना और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना राष्ट्रीय महत्व का विषय है। इस उद्देश्य की पूर्ति में, राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय

- 1949 में स्थापित, राष्ट्रीय संग्रहालय भारत का सबसे बड़ा संग्रहालय है।
- 210,000 से अधिक कलाकृतियों का संग्रह, जिसमें मूर्तियां, चित्र, पांडुलिपियां, सिक्के, हथियार और वस्त्र शामिल हैं।
- भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है।

संरक्षण

- राष्ट्रीय संग्रहालय में एक समर्पित संरक्षण विभाग है जो कलाकृतियों की देखभाल और संरक्षण के लिए जिम्मेदार है।
- विभाग वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके कलाकृतियों को क्षति से बचाता है और उनकी मूल स्थिति में बहाल करता है।
- विभाग द्वारा किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में रक्षा मंत्रालय में दीवार चित्रों का संरक्षण और पुनर्स्थापन, वित्त मंत्रालय में चित्रों का परिरक्षण, और 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से प्राप्त कलाकृतियों का संरक्षण शामिल है।

राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी

- 1954 में स्थापित, राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत की सबसे महत्वपूर्ण आधुनिक कला संग्रहालयों में से एक है।
- 20वीं और 21वीं सदी के भारतीय कलाकारों द्वारा 4,000 से अधिक कलाकृतियों का संग्रह।
- भारत की समकालीन कलात्मक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है।

संरक्षण

- राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी में कलाकृतियों के संरक्षण के लिए केंद्रीय वातानुकूलन संयंत्र स्थापित है।
- कलाकृतियों का नियमित रूप से निरीक्षण और क्षतिग्रस्त टुकड़ों को बहाल किया जाता है।
- गैलरी में कलाकृतियों के संरक्षण और बहाली के लिए एक समर्पित कार्यशाला भी है।

निष्कर्ष: राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत की कलात्मक विरासत को संरक्षित करने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन संस्थानों द्वारा किए गए प्रयासों ने भारत की कलात्मक विरासत को सुरक्षित रखने और उसे दुनिया के सामने प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उपचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है कला

परिचय

- कला स्वयं के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। यह विश्व क के प्रति कलाकार का अपना अनूठा दृष्टिकोण है। भाषा अथवा संगीत की भांति ही कला भी मानव को मिली ऐसी ईश्वरीय या कहें कि प्राकृतिक देन है जो उसे पशुओं की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है।
- कला मानव मस्तिष्क या मनुष्य की सोच को कुछ इस प्रकार प्रभावित करती है जिसे ज्ञान अथवा शिक्षा के माध्यम से सही-सही समझ पाना सहज नहीं है। परन्तु कला के माध्यम से हम मानव स्वयं अपने बारे में बहुत गहराई से जान-समझ पाते हैं तथा अन्य लोगों के साथ सामंजस्य और एकात्मकता भी स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

कला का प्रभाव शब्दों से कहीं अधिक है

- मनोरंजन के लिए कला को तभी से माध्यम बनाया जा रहा है जब मानव गुफाओं में रहता था। वन्य पशुओं के शिकार के अनुभवों की स्मृति ताजा करना और मनोरंजन की अनुभूति करना सर्वाधिक साहसी और सक्षम शिकारियों के लिए भी रोंगटे खड़े करने वाला अनुभव रहा होगा।
- अनादि काल से ही गुफाओं में रहने वाले मनुष्यों ने कला की मनोरंजक क्षमता के साथ ही इसकी रोग निवारक तथा उपचार क्षमता को भी भली प्रकार जान लिया था। मुक्त अभिव्यक्ति या मन की उलझन को व्यक्त कराना मनोवैज्ञानिकों की सर्वाधिक उपयोगी उपचार प्रणाली रही है। इस चिकित्सा पद्धति में उपचार के लिए कलात्मक अभिव्यक्ति के इसी पहलू का प्रयोग किया जाता है।
- जहां ललित कला में सुन्दर और अनुपम कृति के सृजन के लिए प्रतिभा और कौशल को अत्यधिक निपुणतापूर्वक प्रयोग किया जाता है वहीं कला उपचार पद्धति में कला की आत्माभिव्यक्ति के माध्यम से चिकित्सा करने पर बल दिया जाता है।
- समन्वित क्रियाएं अपनाकर कला थेरेपी में मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास रहता है जो मौखिक या शाब्दिक अभिव्यक्ति से भिन्न और अधिक प्रभावी होता है।
- अंग संचालन, संवेदी अभिव्यक्ति, धारणात्मक तथा प्रतीकात्मक अवसर संचार प्रवाह की ग्राह्यता और अभिव्यक्ति की वैकल्पिक विधाओं को अपनाने की प्रेरणा देता है जिनसे भाषागत बंधनों और सीमाओं को आसानी से पार किया जा सकता है।

बच्चे और कला

- कई बच्चे अपनी भावनाएं बोलकर बताने की जगह डाइंग या पेंटिंग बनाकर या किसी अन्य कलात्मक तरीके से ज्यादा अच्छी तरह से व्यक्त कर पाते हैं, बोलकर नहीं। कला चिकित्सा बच्चे की इस कला अभिव्यक्ति की मदद से उसकी भावनाओं और सोच को बेहतर ढंग से आसानी से समझ सकते हैं।
- वे बच्चों को यह भी ठीक से समझा सकते हैं कि वे सृजनात्मक या रचनात्मक माध्यम अपनाकर अपनी परेशानियां व्यक्त करें। कष्ट और तनाव झेलने वाला बच्चा आमतौर पर यह अनुमान नहीं लगा सकता है , कि जो कुछ भी हो रहा है वह क्यों और कैसे

हो रहा है। रंगों की मदद से वह अन्य लोगों को अपनी जरूरतों के बारे में बताने और अपनी भावनाएं उन तक पहुंचाने में ज्यादा आसानी महसूस कर सकता है।

- पेंटिंग की कला के जरिए वह बच्चा अपनी बेचैनी का कारण बयान करने में कामयाब होते हैं। यदि कला की सहायता नहीं मिल पाती बच्चे को उसके अभिभावक और देखरेख करने वाले जिद्दी और बेचैन बताकर की अनदेखी करते रहते।

दिव्यांग या विशेष जरूरतों वालों के लिए कला का महत्व

- विशेष जरूरतों वाले लोग खासकर बच्चे, दुनिया का जैसा अनुभव करते हैं उसकी हम इस लेख को पढ़ने वाले सामान्य लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दिव्यांगता की चुनौती को झेलना अपने-आप में बड़ी कठिन त्रासदी है।
- इस प्रकार की दिव्यांगता वाले बच्चों को संचार यानी अपनी बात समझाने और सामने वाले की बात समझने की संकटपूर्ण स्थिति से गुजरना पड़ता है। उन्हें अपनी बात कहने में कठिनाई होती है और अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए अलग तरीके से प्रयास करने पड़ते हैं क्योंकि उनकी खास जरूरतें और चुनौतियां (दिव्यांगता) भी अलग प्रकार की होती हैं।
- उन बच्चों के माता-पिता और भाई-बहन भी उनके सबसे करीबी होने के बावजूद दुनिया के बारे में उनके नजरिये को नहीं समझ पाते। कई बार तो खास जरूरतों वाले बच्चों में व्यवहार संबंधी परेशानियां भी रहती हैं।
- इसकी साधारण की वजह यही है कि दुनिया के बारे में उनका अनुभव इतना अलग तरह का होता है कि उसके बारे में बता पाना बेहद मुश्किल होता है। सामान्य जन इस बात का अंदाजा भी नहीं लगा पाते कि वे कैसी चुनौतीपूर्ण स्थिति झेल रहे होते हैं, वे अपने भीतर चल रहे द्वंद्व के बारे में कुछ भी बता पाने में असमर्थ होते हैं तथा शब्दों से, इशारों या संकेतों से अथवा शारीरिक हावभाव से भी वे अपनी उलझन समझा नहीं पाते।
- हर व्यक्ति में कला की किसी न किसी विधा में सृजन करने की क्षमता और योग्यता होती है। इसलिए जो बच्चे शैक्षिक, व्यावसायिक अथवा शारीरिक उपलब्धियों के मानकों के हिसाब से कामयाब नहीं हो पाते वे कला का निर्माण तो अवश्य ही कर सकते हैं।

चिकित्सा और ऊर्जा के स्रोत के रूप में कला के लाभ

- **अभिव्यक्ति में सहायक :** जब व्यक्ति अपने विचारों को देखने की स्थिति पा लेता है और उन्हें स्पष्ट रूप से देख पाता है तो उसे ऐसी भावनाओं के स्रोत का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। यह चिकित्सा की दिशा में पहला चरण है।
- **विश्वास जमाना और नियंत्रण प्राप्त करना:** कला कभी 'गलत' नहीं होती। कला के इस स्वाभाविक गुण, स्वभाव से ही कलाकार में स्थिति पर नियंत्रण पा लेने का भाव जगता है और उसमें इच्छित विकल्प चुनने की क्षमता-योग्यता भी आ जाती है।
- किसी बच्चे की बौद्धिक निपुणता और ग्राह्य क्षमता में सुधार कला वास्तव में क्रिया है जिसे भौतिक रूप से किया जाता है। यह संचालन, अर्थात् व्यक्ति का क्रियाकलाप और उसका परिणाम (जो कभी गलत नहीं होता) ही ग्रहण करने की क्षमता और मस्तिष्क संचालन में विकास को जन्म देता है तथा भावनाओं का नियमन भी करता है। फिर, कला में लगने वाले व्यक्ति का मस्तिष्क शांत और लक्ष्यकेंद्रित होना जरूरी है और यही संज्ञान क्षमता के विकास की पूर्व-शर्त भी है।

- सृजनात्मक अभिव्यक्ति कला सदा ही रचनात्मक और सकारात्मक होती है तथा विनाश और अड़चन/बंधन की विरोधी होती है। यह आत्माभिव्यक्ति जगाकर उसे सहेजती है जो सृजनशीलता को जन्म देती है।

निष्कर्ष

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो कला सदैव ही वास्तविकता की समस्या का प्रतिबिम्ब होती है-उस वास्तविकता की ऐसी प्रतिक्रिया या प्रति उत्तर है जिसमें हमें मजबूरन जीना पड़ता है। यह वास्तविकता की आलोचना, सराहना या सुधार है। कला वास्तविकता के आदर्श मॉडल का निर्माण करती है और कभी-कभी उसकी आलोचक या विरोधी भी बन जाती है।

कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव

- संग्रहालय शक्तिशाली स्थान हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोग इसे समझने और इसके बारे में खुद को जागरूक करने के लिए एक तरह के क्यूरेटेड संग्रह को देखने आते हैं। संग्रहालयों में, 'कला' संग्रहालय विशेष संग्रहालय हैं जो दुनिया भर या विशिष्ट क्षेत्रों से कला एकत्र करते हैं, संरक्षित करते हैं और प्रदर्शित करते हैं।
- दुनिया भर में कई देशों में कला संग्रहालय मौजूद हैं। दुनिया भर में अनगिनत कला संग्रहालय हैं, प्रत्येक का अपना अनूठा संग्रह और फोकस है। कला संग्रहालय एक सार्वजनिक या निजी संस्थान है जो जनता की शिक्षा और आनंद के लिए कला के कार्यों को एकत्रित, संरक्षित, प्रदर्शित और व्याख्या करता है।
- इन संस्थानों में आम तौर पर पेंटिंग, मूर्तियां, फर्नीचर, चित्र, प्रिंट, तस्वीरें, कपड़ा, चीनी मिट्टी की चीजें और सजावटी कला सहित विविध प्रकार की कलात्मक वस्तुएं होती हैं।

भारत में संग्रहालय

राष्ट्री संग्रहालय, नई दिल्ली शामिल है:

- राष्ट्रीय संग्रहालय धीमामा के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक है. जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की कला, कलाकृतियों और पुरावशेषों का विशाल संग्रह है।
- इसमें मूर्तिकला, पेंटिंग, सजावटी कला, सिक्के और पांडुलिपियों का संग्रह है। नैशनल गैलेरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए), नई दिल्ली: 1954 में स्थापित, एनजीएमए भारत के प्रमुख कला संस्थानों में से एक है, जो आधुनिक और समकालीन भारतीय कला का प्रदर्शन करता है। इसमें प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रों, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों का एक व्यापक संग्रह है।

सालार जंग संग्रहालय, हैदराबादः

- मूसी नदी के तट पर स्थित है, सालार जंग संग्रहालय कला और प्राचीन वस्तुओं का दुनिया भर में सबसे बड़े निजी संग्रहों में से एक है। इसके संग्रह में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की पेंटिंग, मूर्तियां, वस्त्र, चीनी मिट्टी की चीजें और फर्नीचर शामिल हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (पूर्व में प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय), मुंबई:

- मुंबई के इस संग्रहालय में भारतीय कला का एक प्रभावशाली संग्रह है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की मूर्तियां, लघु चित्र, सजावटी कला और कलाकृतियां शामिल हैं।

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता:

- 1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय भारत का सबसे पुराना और बड़ा संग्रहालय है। इसमें कला और कलाकृतियों का एक विशाल संग्रह है, जिसमें मूर्तियां, पेंटिंग, सिक्के और पुरातात्विक खोज शामिल हैं, जो भारत और अन्य एशियाई देशों की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़: चंडीगढ़ के इस संग्रहालय में गांधार मूर्तियां. लघु चित्र और समकालीन भारतीय कला, कलाकृतियों का एक विविध संग्रह है। इसमें सिंधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है।

जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई:

- 1952 में स्थापित, जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई की सबसे प्रमुख कला दीर्घाओं में से एक है। यह उभरते और स्थापित दोनों भारतीय कलाकारों के कार्यों को प्रदर्शित करने वाली नियमित प्रदर्शनियों का आयोजन करता है। इस तरह के कुछ उदाहरण हैं, और पूरे भारत में कई कला संग्रहालय और गैलरी हैं, जिनमें से प्रत्येक देश की कलात्मक विरासत पर एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य पेश करते हैं।

सालार जंग संग्रहालय की कहानी

- हैदराबाद में सालार जंग संग्रहालय एक समृद्ध और आकर्षक इतिहास समेटे हुए है, जो सालार जंग परिवार की विरासत और कला संग्रह के प्रति उनके जुनून से जुड़ा हुआ है। इसकी शुरुआत नवाब मीर यूसुफ अली खान द्वारा संग्रहित एक निजी संग्रह के रूप में हुई, जो सालार जंग III के नाम से लोकप्रिय थे, जिन्होंने 1912 से 1914 तक निज़ाम शासन के तहत हैदराबाद के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया।

कला संग्रहालयों में डिजिटलीकरण का उपयोग

- कला संग्रहालय अपने संग्रह को व्यापक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाने के लिए डिजिटलीकरण को तेजी से अपना रहे हैं। इसमें कलाकृतियों का डिजिटलीकरण करना, आभासी प्रदर्शनियां बनाना और शिक्षा और आउटरीच के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करना शामिल है।
- डिजिटलीकरण संग्रहालयों को नाजुक वस्तुओं को संरक्षित करने, वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने और गहन अनुभवों के लिए नई प्रौद्योगिकियों के साथ जुड़ने की अनुमति देता है। हालांकि, फंडिंग, कॉपीराइट मुद्दे और डिजिटल संरक्षण सुनिश्चित करने जैसी चुनौतियां डिजिटलीकरण के प्रयास करने वाले संग्रहालयों के लिए महत्वपूर्ण सोच-विचार बनी हुई है।
- हालांकि सालार जंग संग्रहालय ने इस दिशा में बड़े प्रयास किये हैं। सालार जंग संग्रहालय की कलाकृतियों और पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकों को भी डिजिटल कर दिया गया है। इसकी लाइब्रेरी में आरएफआईडी तकनीक का उपयोग लागू किया गया है। संग्रहालय की व्यापक डिजिटल उपस्थिति है।
- इसकी वेबसाइट salarjungmuseum.in पर, ऑडियो ऐप, ऑनलाइन टिकट खरीदने और ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसी नई पहलों के बारे में विवरण दुनिया भर के लोगों में शोध रुचि पैदा करता है।

- संग्रहालय संग्रह के बारे में 'ऑनलाइन प्रदर्शनियां' एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर रही हैं जो जनता को परिचित और उत्साहित करती है। वेबसाइट में लाइब्रेरी कैटलॉग भी है। इसके अलावा, सालार जंग संग्रहालय लाइlite की डिजिटलीकृत पुस्तकें Indianculture.gov.in पर 'दुरुस् पुस्तकें' और 'ई-पुस्तकें' विकल्पों पर उपलब्ध हैं। संग्रहात्त्य 'गूगल आर्ट्स एण्ड कल्चर' के साथ एक भागीदार संस्थाने है, जिस पर इसकी 52 ऑनलाइन प्रदर्शनियां हैं। यह डिजिटल तकनीक के उपयोग से संभव हुआ है।

संग्रहालय और सोशल मीडिया

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म संग्रहालयों को दर्शकों से जुड़ने, उन्हें नए तरीकों से जोड़ने और उनके शैक्षिक और सांस्कृतिक मिशनों को पूरा करने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं। आइए इस महत्वपूर्ण संबंध पर गहराई से नज़र डालें:

- **बढ़ी हुई पहुंच और दृश्यता -** सोशल मीडिया, संग्रहालयों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देता है, जिसमें युवा पीढ़ी, अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर के लोग और वे लोग शामिल हैं जो आमतौर पर संग्रहालय में जाने पर विचार नहीं करते हैं।
- **बढ़ी हुई सहभागिता-** इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म संग्रहालयों को कहानियां, पर्दे के पीछे की झलकियां, शैक्षिक सामग्री और इंटरैक्टिव अनुभव साझा करने में सक्षम बनाते हैं. जिससे आगंतुकों के साथ गहरी सहभागिता को बढ़ावा मिलता है।
- **सामुदायिक भवन संग्रहालय-** सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन समुदाय बना सकते हैं, बातचीत को बढ़ावा दे सकते हैं, फीडबैक को प्रोत्साहित कर सकते हैं और आगंतुकों के बीच अपनेपन की भावना जगा सकते हैं।
- **घटना का प्रचार-** सोशल मीडिया आगामी घटनाओं, प्रदर्शनिया और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने, उपस्थिति और रुचि बढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। अधिकांश कला संग्रहालयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

1. प्रतिस्पर्धा- सोशल मीडिया एक भीड़-भाड़ वाली जगह है। और संग्रहालयों को प्रभावी ढंग से सामने आने की जरूरत है।

2. सामग्री निर्माण-, सामग्री की सुसंग आकर्षक योजना बनाना। प्रासंगिक

3. पहुंच- संग्रहालय को यह सम्मिणिवत करने की आवश्यकता हैध्याशल मीडिया उपस्थिति विविध दर्शकों के लिए सुलभ हो और विभिन्न शिक्षण शैलियों की पहुंच संभव बनाए।

4. प्रभावशीलता- को मापना सोशल मीडिया प्रयासों के प्रभाव को ट्रैक करने और इसके मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए विशिष्ट मैट्रिक्स और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

5 . आभासी उपस्थिति - संग्रहालय, आभासी पर्यटन और अनुभव प्रदान करने के लिए लाइव वीडियो का तेजी से उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनके संग्रह दूरस्थ रूप से पहुंच संभव हो।

6. सोशल मीडिया- प्रभावित करने वाले प्रासंगिक प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग होने से पहुंच व्यापक बन सकती है और नए दर्शकों को आकर्षित कर सकती है।

7. नए मंच - नए प्लेटफार्मों के बारे में सूचित रहना और तदनुसार रणनीतियों को अपनाना संग्रहालयों के लिए प्रासंगिक बने रहने की कुंजी है। हैदराबाद के सालार जंग संग्रहालय ने दुनिया भर में कला इतिहास के प्रति उत्साही लोगों के लिए अपने मीडिया हैंडल और पोर्टल के माध्यम से डिजिटल रूप से ऑनलाइन स्थान पाया है।

कला संग्रहालय सांस्कृतिक केंद्र और हॉटस्पॉट के रूप में काम करते हैं जहां आगंतुक क्यूरेटेड प्रदर्शनियों, व्याख्यान, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से कला, इतिहास और विभिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़ सकते हैं और सीख सकते हैं। वे सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नए विचारों का पोषण करने और विविध समुदायों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कथा कॉमिक्स की

- भारत में कॉमिक्स की ऐसी लोकप्रियता की नींव 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सुकुमार राय अपनी बाल पत्रिका 'संदेश' में रख चुके थे। पश्चिम बंगाल के प्रख्यात फिल्म निर्माता निर्देशक सत्यजित राय के पिता सुकुमार राय के द्वारा बनाई और प्रकाशित 'करुणामोई रानी रशमोणि' कॉमिक स्ट्रिप को अक्सर भारत के पहले कॉमिक स्ट्रिप का मान दिया जाता है।
- चित्रों के साथ शब्दों को मिलाकर संवाद या कथाकारी की ये परंपरा शुरू कैसे हुई? इसका कोई ऐतिहासिक दस्तावेज तो नहीं मिलता, पर ऐसा माना जाता है कि मानव प्रजाति के साथ-साथ इसका भी कालक्रम में विकास हुआ है।
- अपनी अभिव्यक्ति को अपनी कहानियों को जब मूर्त करने की आवश्यकता पड़ी, तो इंसान ने भित्तिचित्र, पात चित्र, धातु, पत्थर, काष्ठ पर अपनी कला को उकेरना शुरू किया और उसे अधिक प्रभावशाली बनाने का नया माध्यम नयी तकनीक भी ढूंढता रहा।
- 16वीं सदी के शुरुआती दिनों में इटली के पॉलीमैथ, महान चित्रकार, आविष्कारक, संगीतकार लियोनार्दो दा विंची (Leonardo da Vinci) एक दिन एक सिक्के को देख रहे थे, उसमें किसी राजा के चेहरे की छवि उकेरी गई थी। घिसने के कारण या दरार पड़ने के कारण वो चेहरा ज्यादा दिलचस्प, ज्यादा असरदार लग रहा था।
- उनके कौतूहल ने उन्हें जीर्ण सिक्कों पर विकृत हो रहे चेहरों का अध्ययन कराया। उसके बाद उन्होंने अपनी पेंटिंग में चेहरों को विकृत करके अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयोग शुरू किया। यही कार्टून कैरिकेचर, कॉमिक्स जैसी कला का उद्गम या प्रेरक बिन्दु माना जाता है।
- 1560 के दौर में एक इतालवी चित्रकार ग्यूसेप आर्किबोल्डो (Giuseppe Arcimboldo) ने फूलों, सब्जियों, फलों, मुर्गी, मछली, किताबों जैसी चीजों के चित्रों से अपनी आकृतियां गढ़ना शुरू किया।

विकास क्रम

- 18वीं सदी की शुरुआत तक कार्टून और कैरिकेचर की ये कला पूरे यूरोप में अपनी जड़ें जमा चुकी थी। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक स्विस कैरिकेचर आर्टिस्ट, रोडोल्फ टॉपफर ने 'द ऐडवेंचर्स ऑफ मिस्टर ऑबडियाह ओल्डबक' प्रकाशित किया, जिसे आज भी कॉमिक्स के इतिहास में बड़ा ही अहम दर्जा दिया जाता है।
- यूं तो छिट-पुट रूप से कार्टून की संस्कृति भारत पहुंच गई थी, किन्तु कार्टून की शुरुआत का लैंडमार्क 1930 को माना जाता है जब युवा शंकर पिल्लै ने अपने कार्टूनों से मुंबई में धूम मचा दी थी।

- देश गुलाम था और उनके कार्टून ब्रिटिश हुकूमत पर तंज कसते थे। मुंबई के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में छपने वाले उनके कार्टूनों की दीवानगी बढ़ती ही जा रही थी। मुंबई से निकल कर उनकी लोकप्रियता देश के दूसरे हिस्से में पहुंचने लगी थी। 1948 में उन्होंने 'शंकर्स वीकली' नाम की एक पत्रिका भी शुरू की।
- अब तक भारत के अखबारों में कार्टून और कॉमिक स्ट्रिप्स छपने लगे थे। 1947 में बी. नागी रेड्डी और चक्रपाणी ने एक मासिक पत्रिका 'चंदामामा' का प्रकाशन शुरू किया। इसमें कॉमिक स्ट्रिप के रूप में भारतीय पौराणिक, लोककथा और ऐतिहासिक कहानियां प्रकाशित होने लगीं।
- वर्ष 1960 के दशक में, जब ली फाल्क द्वारा बनाई गई द फैंटम कॉमिक स्ट्रिप भारत में बहुत प्रसिद्ध हो गई, तो उसका कॉपीराइट लेकर अनंत पई और कुछ अन्य लोगों ने इन्हें कॉमिक बुक के रूप में 1964 में प्रकाशित करना शुरू किया।
- इसका नाम रखा 'इंद्रजाल कॉमिक्स'। द फैंटम बना वेताल और उसकी कहानियों को इस फॉर्मेट में फिट करने के लिए संपादित किया गया, फैंटम और उसकी प्रेमिका डायना के चुंबन सीन को निकाल दिया गया।

कथा कॉमिक्स पर वैश्विकरण का प्रभाव

- 1990 के दशक में टेलीविजन की बढ़ती लोकप्रियता और वीडियो गेम्स के आगमन के कारण भारत में कॉमिक बुक्स का प्रचलन कम होने लगा। कई कॉमिक्स बंद हो गए पर कुछ प्रकाशकों ने कॉमिक बुक्स बनाना और वितरित करना जारी रखा, जिनमें नए और पुराने पात्र थे, जैसे डोगा, सुपर कमांडो ध्रुव, शक्ति और तंत्री द मंत्री। ये कॉमिक बुक्स मुख्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध थीं, एक निश्चित बाजार को लक्षित करती थीं।
- 2000 के बाद भारत में आई इंटरनेट क्रांति ने कॉमिक बुक्स और ग्राफिक नॉवेल्स को पुनर्जीवन दिया कई स्वतंत्र और वैकल्पिक कॉमिक बुक निर्माता उभरने लगे, विविध और समकालीन विषयों जैसे सामाजिक न्याय, सेक्सुअलिटी, का उदय हुआ। कॉमिक बुक्स और ग्राफिक नॉवेल्स अंग्रेजी और अन्य भाषाओं, हिंदी, उर्दू और बंगाली में ऑनलाइन वेबसाइट पर प्रकाशित और उपलब्ध होने लगे। स्वयं प्रकाशित करने का भी विकल्प मिल गया।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स भी इस कला को एक अलग मकाम तक ले जाने का वादा कर रहा है। पिछले दो तीन दशकों में इन कॉमिक बुक्स किरदारों पर बनी फिल्मों ने बहुत मुनाफा कमाया है। यही वजह है कि पिछले कुछ वर्षों में ग्लोबल कॉमिक बुक बाजार का आकार बढ़ता ही जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2023 में 16.05 अरब डॉलर की ये इंडस्ट्री बढ़कर 2030 तक 22.37 अरब डॉलर की हो जाएगी। आज विश्व को इंतज़ार है नये कॉमिक किरदारों का सुपरहीरो का जो इस कल्पना को अंजाम दे सके।

❖❖❖❖